प्रातःक्लास ओम 25.6.66

डबल ओमशांति।एक शिवबाबा कहते हैं ,एक ब्रह्मा बाबा कहते हैं।दोनों का स्वधर्म है शान्त।दोनों ही शांतिधाम में रहने वाले हैं।तुम बच्चे भी शांतिधाम में रहने वाले हो।निराकार देश में रहने वाले आये हो .....देश में पार्ट बजाने;क्योंकि यह ड्रामा है ना।बच्चों को ड्रामा की आदि ,मध्य, अंत का ज्ञान बुद्धि में भरा हुआ है उपर से लेकर नीचे तक।उंच ते उंच भगवान, उनके बाद बच्चे।इन बातों को अच्छी रीति समझो।तुम्हारे सिवाय यह ज्ञान कोई में है नहीं।तुम पढ़ते हो खुदाई स्कूल में।भगवानोवाचय।भगवान तो एक ही है।.....
....सबका एक बाप है।बाप सृष्टि रचते हैं तो कहा जाता है प्रजापिता ब्रह्मा।उनको(इनको) प्रजापिता नहीं कहेंगे।प्रजा तो जन्म–मरण में आती है।आत्मा के आधार से प्रजा जन्म–मरण में आती है।फिर चाहिए प्रजापिता ब्रह्मा गाया हुआ है।परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं मनुष्यों की।ऐसे नहीं कि कोई नई रचना रचते हैं।उनको बुलाया ही जाता है पतित पावन आओ।जब दुनियां पतित बनती है और उनका अंत होता है तब ही बाप आते हैं पतित से पावन बनाने।अब तुम जान गये हो बाप आते भी एक बार हैं और कब आते ही नहीं।शास्त्रों में और जो इतने अवतार हैं वो सब हैं झूठे।इसको मिथ्या ज्ञान कहा जाता है।मिथ्या ज्ञान को कहा जाता है अज्ञान।अज्ञान को अंधेरा कहा जाता है।ज्ञान को सोझरा कहा जाता है।तुम अंधेरे में थे (थे)।तुमको कुछ भी पता नहीं था।ना उंच ते उंच भगवान का ,ना उनकी बायोग्राफी का।अभी तुमको सारा नालेज मिला है।तुम ड्रामा के एक्टर्स हो नाा।ड्रामा के एक्टर्स को सबकी एक्ट का जरूर पता होना चाहिए कि क्या2 पार्ट है।वो होता है छोटा हद का ड्रामा।उनका तो सबको पता पड़ जाता है।तुम भी देखकर आते हो।चाहो तो लिख भी सकते हो।याद कर सकते हो।छोटा सा होता है।वह तो बड़ा बेहद का ड्रामा है जिसको तुम सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक जानते हो।अभी तुम बच्चे जानते हो हमको बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है।फिर उस...बाप से हद का वर्सा ,हद की प्रापर्टी मिलती है।बाबा ने समझाया था राजायें जो बनते हैं तो वो अगले जन्म में दान–पुण्य आदि करने एक जन्म लिये राजा बनते हैं।ऐसे नहीं कि वो दूसरे जन्म में भी बनेंगे।नहीं।तुम जो सतयुग में राजायें–महाराजायें थे ऐसे मत समझो कि तुम्हारी राजाई कोई गुम हो जाती है।फिर जब भक्तिमार्ग होता है तब भी जो जास्ती दान–पुण्य करते हैं तो वो भी फिर राजाई में जाते हैं ;परंतु वो फिर हो जाते हैं विकारी राजायें।तुम ही जो पूज्य थे सो फिर पुजारी बनते हो।वो होता है अल्पकाल का सुख।दुःख तो सिर्फ अभी होता है।जब तुम तमोप्रधान बने हो।जब रजोप्रधान हो तो भी इतना दुःख नहीं है।बुद्धि से काम लेना है ना।रजोप्रधान में भी तुमको सुख है।कोई लड़ाई–झगड़े की बात ही नहीं।यह तो याद में होता है।जब लाखों के अंदाज में हो जाते हैं तब लड़ाई शुरू होती है।तुम बच्चों को तो सतयुग, त्रेता, द्वापर में भी सुख है।जब तमोप्रधान शुरू होता है तब थोड़ा दुःख होता है।अभी तो है ही तमोप्रधान।बाप समझाते हैं यह है ही ड्रामा।इनसे कोई भी छूट नहीं सकता।मनुष्य जब दुःख में तंग हो जाते हैं तब कहते हैं भगवान ने ऐसा खेल क्यों रचा है।अगर रचे ही नही तो दुनियां ही नहीं होती।कुछ नहीं होता।रचता और रचना तो है ना।बच्चे जानते हैं नई दुनियां सो पुरानी होती है।पुरानी सो फिर नई होती है।उनकी डिटेल भी है सतयुग से कलियुग अंत तक।बाकी थोड़े रोज़ हैं।तुम सब प्रक्टिकल में देखेगी।पहले से ही तो नहीं दिखावेंगे।5000.....बाकी जो थोड़ा टुकड़ा है वो अभी थोड़े ही दिखावेंगे।नहीं।जब होगा तो उनको भी साक्षी होकर देखेंगे।जो होना होगा वो कल्प पहले मुआफिक होगा।यह तो देखते हो तैयारियां हो रही हैं।विनाश तो होगा जरूर।सबकी तैयारियां हो रही हैं।वो ड्रामा में पहले से ही नूंध है।विनाश जरूर होगा।अब तुम बच्चों को बाप समझाते हैं तुमहारी

आत्मा जो तमोप्रधान बनी है .....सतोप्रधान बनना है।यह तुम अभी समझते हो मनुष्यों को इन बातों का कुछ भी पता नहीं है।बाप गुप्त आते हैं।गुप्त ही तुमको ज्ञान दे रहे हें।दुनियां में कोई नहीं जानते हैं।गुप्त रीति तुम विश्व का राज्य (लेते हो)।कोई भी आवाज़ नहीं।बिल्कुल ही गुप्त।गुप्त दान कहा जाता है।बाप आकर बच्चों को अविनाशी ज्ञान रतनों का गुप्त दान देते हैं।बाप भी कितना गुप्त है।कोई नहीं जानते।यह सब कहां जाती हैं।ब्रह्माकुमारियां क्या करती हैं कुछ समझते नहीं।तुम बच्चे जानते हो बाबा कितना गुप्त है।तुम बच्चों को गुप्त विश्व का मालिक बनाते हैं।ना कोई लड़ाई ,ना कोई बारूद आदि, ना कोई खर्चा।यहां तो एक छोटा गांव लेने में ही कितने झगड़े,मारा–मारी चल पड़ते हैं।तो बाप आकर गुप्त दान देते हैं।अविनाशी ज्ञान रतनों से तुम्हारी झोली भरते हैं।कहते हैं ना भर दे झोली शिव भोला भंडारी।तुम जानते हो शिवबाबा हमारी अविनाशी की झोली भर रहे हैं।तो यह एक2 रतन लाखों ...का है।तुम कितने रतन लेते हो।फिर तुम कितना .....बनते हो।वो भी गुप्त।देवताओं को कितने .....भुजायें आदि दे दी हैं।वास्तव में है कुछ भी नहीं।सतयुग में देवियों आदि को इतनी भुजायें तो होती नहीं।कलियुग में कितने अनेक प्रकार के हथियार दे दिये हैं।विनाश के लिए तो बॉम्ब्स हैं।फिर तलवार ,बाण आदि क्या करेंगे?तुम कहते हो ना ज्ञान खडग,ज्ञान तलवार।तो उन्होंनं स्थूल हथियार समझ लिये हैं।.....तुमको तो गुप्त दान मिलता है।तुम फिर सबको गुप्त दान देते हो।तुम जानते हो बाप .....मत दे रहे हैं।श्रीमत है ही भगवान की।कृष्ण तो मनुष्य हुआ।मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते।ब्रहमा को भी देवता कहा जाता है सूक्ष्मवतन में।इनको भी भगवान नहीं कहा जाता।लक्ष्मी नारायण आदि को भी भगवान–भगवती नहीं कहा जाता।उनको कहा जाता डीटीज्म यानी आदि सनातन देवी देवता धर्म।लक्ष्मी देवी के नारायण देवता।भगवान–भगवती यह तो .....दी है ;क्योंकि स्वर्ग के मालिक हैं ना।स्वर्ग स्थापन करते हैं भगवान।इसलिए उनको भगवान–भगवान कह दिया है।तुम जानते हो हम आये हैं नर से नारायण बनने।उनको सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण दैवी गुणधारी कहा जाता है।दैवी गुण सिर्फ उन देवी देवताओं में होते हैं।14कला में भी 2 कला कम हो **जाती है।जैसे सम्पूर्ण चन्द्रमा की रोशनी अच्छी होती है।फिर कम होती जाती है।कम२ होते२ बाकी एकदम पतली लीकें बच जाती हैं।वो सारा गुम नहीं होता है।लीक रहती है जिसको मुसलमान लोग चन्ड कहते हैं।अब तुम्हारी है बेहद की** बात।तुम ..... सम्पूर्ण बनते हो।दिखाते हैं ना कृष्ण के मुख में मातायें चांद देखती हैं।यह है (**सारी यहां**)की बात।जिसकी समझानी बैठ देते हैं।अब तुमको सम्पूर्ण बनना है।माया का सम्पूर्ण ग्रहण लगा हुआ है।बाकी जाकर लकीर बचती है।सीढ़ी उतरते आये हैं।सबको सीढ़ी उतरनी है।तब ही फिर सबको वापिस जाना पड़े।तुम तो अभी थोड़े हो।आहिस्ते2 वृद्धि होगी।पढ़ाई में बहुत नहीं होते हैं।तुम्हारी सेंटर्स भी धीरे2 बढ़ते हैं।समय नजदीक आता जायेगा।फिर समझेंगे इनमें क्या है।दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते रहते हैं।अभी भी कहते हैं हमने समझा था यह कहां तक चल सकेगी।खतम हो जावेगी।शुरू में इस डर से बहुत भाग गये।पता नहीं क्या होगा?ना यहां के ,ना वहां के रहेंगे।इससे तो भागो।भाग गये।फिर उनमें से आते रहेंगे।बाप कितना सहज रीति बैठ समझाते हैं।इन अबलाओं ,अहिल्याओं को कोई तकलीफ नहीं देते।इन्हों का भी उद्धार तो होना है ना।कहती हैं बाबा हम तो कुछ पढ़ी–लिखी नहीं हैं।बाप कहते हैं कुछ ना पढ़ी हो तो बहुत अच्छा है।शास्त्र आदि जो कुछ पढ़े हो वो सब भूल जाओ।मैं कुछ जास्ती नहीं पढ़ाता हूँ।सिर्फ कहता हूँ अल्फ को याद करो तो फिर बादशाही तुम्हारी है।बस।तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।बच्चा पैदा हुआ कहेंगे बाबा।बस वर्से का हकदार बन जाता है।यहां भी हकदार बन जाते।बापदादा को याद किया और राजधानी तुम्हारी।इसलिए गाया हुआ है सेकेंड में जीवनमुक्ति।साहुकार लोग

का है पिछाड़ी का पार्ट।पहले गरीबों की....है।तुम्हारे पास आपे ही आयेंगे।मेहतर का भी उद्धार होना है।भीलनी का भी गायन है ना।कहते हैं राम ने भीलनी के बेर खाये।वास्तव में राम भी नहीं है तो शिवबाबा भी नहीं है।हां, हो सकता है इस ब्रह्मा को खाना पड़े।भीलनी आदि आयेगी, समझो टोली ले आये तो अंगीकार करना पड़े ना।भीलनी, गणिकायें ले आवेंगी तो तुम भी, हम भी खावेंगे।शिवबाबा कहते हैं मैं तो नहीं खाउंगा।में तो अभोक्ता हूँ।तुम्हारे पास आवेंगे सभी।गवर्मेंट भी मदद करेगी कि इनको उठाओ।तुमको भी आटोमेटिकली प्रेरणा होगी।बाबा गरीब निवाज़ है तो हम भी गरीबों को समझावें।भीलनियों से भी निकलेंगे।इतना बड़ा झाड़ है।इनमें एक भी देवी देवता धर्म का नहीं रहा।और सभी धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं।अब बाप कहते हैं जो भक्ति करने वाले हैं उनको समझाओ।तुम देख रहे हो सैम्पलिंग कैसे लगता है।ब्राह्मण कैसे बनते हैं।जो सूर्यवंशी–चंद्रवंशी देवता बने होंगे वो ही आते जावेंगे।एक ....भी सुना तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे।बाबा ने काशी करवट का मिसाल सुनाया है।शिव पर जाकर बलि चढ़ते थे।उनको भी कुछ तो मिलना चाहिए ना।तुम भी बलि चढ़ते हो।पुरुषार्थ करते हो राजाई के लिए।भक्ति मार्ग में राजाई तो होती नहीं।वापिस कोई जा नहीं सकता।तो क्या होता है ,उनके जो पाप किये हुये हैं उनकी सज़ा भोग चुक्तू कर देते हैं।फिर नये सिर जन्म होता है।नये सिर पाप शुरू होते हैं।बाकी रहना तो सबको यहां ही है।नम्बरवन में भी तुम ही हो।तुम ही 84जन्म भोगते हो।सबको सतो, रजो, तमो में आना होता है।बाप कहते हैं इस समय सारी मनुष्य सृष्टि का झाड़ जड़जड़ीभूत हो गया है।इनकी आयु ही 5000वर्ष है।मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं।कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं।एक कुम्भकरण नहीं, अनेक हैं।तुम कितना भी समझाते हो, सुनते ही नहीं हैं।जिनका पार्ट है वा पुरुषार्थ करते हैं और वो ही मात पिता के दिल पर चढ़ते हैं।तख्तनशीन भी वो ही बनेंगे।कई बच्चियां पूछती हैं बाबा, बच्चों को मारना पड़ता है।बाप कहते हैं इनको इतना कुछ है नहीं।तुम पुकारती हो हम पतितों को पावन बनाओ।बाप भी कहते हैं काम महाशत्रु है।ऐसे नहीं कहा जाता क्रोध शत्रु है।माताओं में इतना नहीं होता है।पुरुष बहुत लड़ते, करते हैं , मारते हैं।अब बाप ने तुम माताओं को आगे किया है।वन्दे मातरम्।नहीं तो माताओं को कहते हैं 'दूल्हा' पति, गुरू ,ईश्वर सब कुछ है।इनकी मत पर चलना है।हथियाला बांधा और फट से काम कटारी लगी।यह ईश्वर मिला उनको।अब यह बंद होता है।रामराज्य स्थापन होता है ना।बाकी सब मरते जावेंगे।बाबा ने समझाया है विनाश काले विपरीत बुद्धि और विनाश काले प्रीत बुद्धि।तुम्हारी परमपिता परमात्मा (से)प्रीत है ;परंतु वो तो है निराकार।उनको तुम चटक ना सको।तुम्हारी आत्मा जानती है शिवबाबा इनमें आते हैं।इन द्वारा हम सुन रहे हैं।आत्मा, आत्मा को क्या भाकी पहनेगी?इतनी छोटी बिंदी है।शिवबाबा का यह टेम्परेरी रथ है।कहते हैं शिवबाबा को याद कर इनकी गोद में आओ।नहीं तो पाप लग जावेगा।मनुष्य तो बिचारे जानते ही नहीं इसलिए भाकी के लिए खबरदारी भी रखी जाती है।आर्यसमाजियों ने एक भाकी का चित्र हाथ कर .....हंगामा मचाया है।यह भी नूंध है।फिर भी ऐसे होगा।अनेक प्रकार के विघ्न यज्ञ में पड़ते हैं।जहां जाओ वहां यह अपनी चौपड़ी बांटते रहते।पैसे हैं इन्हों के पास बहुत।तब तो खर्चा भी बहुत करते हैं।सब संस्थाओं पास .... .आदि बहुत मिलते हैं।यहां तो पूरा2 तलाब होता है ;क्योंकि तुम जानते हो यह तो सब कुछ मिट्टी में मिल जाना है।कुछ भी रहना नहीं है।इससे तो सफल हो जाये।सुदामा का भी मिसाल है।बच्चियां बाबा पास चावल मूठी भी 6–8 आना साथ भेज देती हैं।वाह बेटी! बाप तो गरीब निवाज़ है ना।यह सब ड्रामा में नूंध है।फिर भी होगा।बांधेलियां हैं, बाबा कहते हैं भाग्यशाली हो।शिवबाबा का हाथ तो मिला ना।एक दिन आवेंगे सब।आर्यसमाजी आदि भी आवेंगे।जावेंगे कहां।मुक्ति–जीवनमुक्ति की एक ही हट्टी है।सजायें खाकर सबको मुक्ति में जाना है।यह है

.....।सब वापिस जावेंगे।वहां जब एक भी नहीं रहेगा, सब आ जावेंगे तब फिर जाना होगा। (इसलिये) कहा जाता है साजन और सजनी की बारात।कैसे बारात जावेगी।वो भी सा. होगा।तुम्हारे सिवाय और कोई देख ना सके।तुम बच्चों को एक ही बाप को याद करना है।बाप है इतनी (सी) बिंदी।कहते हैं बिंदी को कैसे याद करें?अरे,तुम आत्मा भी छोटी बिंदी हो ना।मैं भी बिंदी हूँ।मुझे परमपिता परमात्मा परमधाम में रहने वाला कहते हैं।बाप कहते हैं मैं बिंदी इनकी बाजू में आकर बैंठता हूँ।इसलिए यह भाग्यशाली रथ है।नंदीगण एक रखते हैं ना।मंदिर भल बहुत हैं।नंदीगण बहुत रखते हैं।बाप कहते हैं मेरा रथ यह है।फिर भी कब ,किस में जाय प्रवेश कर मदद करता हूँ।बच्चे भी समझते हैं आज तो बाबा ने मुरली चलाई।अच्छा।फिर भी बाबा कहते हैं मीठे2 बच्चे बाप को याद करो।यह तो समझते हो अब रात पूरी हो दिन होता है।आधाकल्प है स्वर्ग, आधा कल्प हैं नर्क।हार–जीत है ना।अब हाहाकार होकर फिर जय2कार होगी।तुम जानते हो शिवबाबा पास हम रिफ्रेश होते हैं।फिर जाकर रिफ्रेश करना है।मित्र–सम्बंधी आदि कोई भी हो यह पैगाम देते रहो।शिवबाबा कहते हैं दैवी धर्म स्थापन कर बाकी सबको वापिस ले जावेंगे।और धर्म वाले सिर्फ अपना धर्म स्थापन करते हैं।वापिस नहीं ले जाते।यह दोनों कार्य करते हैं।इसलिए बुलाते हैं हे पतित–पावन आओ।अच्छा। मात–पिता बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग।ओम।